Journal
of the
Oriental Institute **ISSN: 0030-5324**
M.S. University of Baroda **Impact Factor 7.1** **UGC CARE Group 1**

सिमोन द बउआ नारीवाद की प्रणेता

डॉ0 अनुराग पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कमला नेहरू प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर (उ0प्र0)

राजनीतिक विमर्श में 'नारीवाद' को एक आयाम के रूप में स्थापित करने का श्रेय 'सिमोन द बउआ' को जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'सेकेन्ड सेक्स' में महिलाओं की समस्याओं, समाज में उनकी स्थिति, सामाजिक संरचना के माध्यम से होने वाले शोषण का विवेचन किया है। सिमोन ने उन विकल्पों पर चर्चा की जिसके माध्यम से नारी की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

'सिमोन द बउआ' ने उपन्यास, निबन्ध, राजनीति, दर्शन और सामाजिक विषयों पर अपने विचार प्रगट किए। 'सिमोन द बउआ' की ख्याति उनकी पुस्तक 'सेकेण्ड सेक्स' द्वारा अकादमिक जगत में फैली। इस पुस्तक के माध्यम से महिलाओं पर होने वाले अत्याचार की विशद विवेचना के साथ ही उन्होंने नारीवाद के आधारभूत मानदण्डों की भी स्थापना की। 'सेकेन्ड सेक्स' पुस्तक 1949 में फ्रेंच भाषा में Le Deuxieme Sexe नाम से प्रकाशित हुयी। इस पुस्तक में लिखा वाक्य कि ''महिला पैदा नहीं होती अपितु बनायी जाती है'' ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। सिमोन ने अपनी पुस्तक में पहली बार जैविक लिंग विभेद और समाज द्वारा आरोपित लिंग भेद में अन्तर किया। उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह बताने का प्रयास किया कि किस प्रकार सामाजिक परिस्थितियाँ जैविक आधार पर लिंग भेद को और पुष्ट करती हैं।

'सिमोन द बउआ' ने स्पष्ट किया कि महिलाओं के शोषण का मूल स्रोत वह परिवेश है जिसमें वह रहती है। 'सिमोन द बउआ' ने महिलाओं के लिए 'सेकेन्ड सेक्स' इसलिए इस्तेमाल किया क्योंकि महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कमजोर बनाया जाता है।

सिमोन ने अरस्तु को उल्लेखित करते हुए कहा कि महिलायें महिला इसलिए होती है क्योंकि ''उसके अन्दर कुछ गुणों की कमी होती है।'' एक्वीनास ने भी महिलाओं को

अपूर्ण पुरूष की संज्ञा दी है। सिमोन पुरूष और स्त्री के बीच ऐसा सम्बन्ध चाहती हैं जो बिना किसी भय, प्रतिबन्ध के स्थापित हो। सिमोन महिलाओं को भी चुनने की स्वतंत्रता की पक्षधर हैं। वह महिलाओं को अधिकार देना चाहती है जिससे वह अपना आन्तरिक और बाहरी विकास कर सके। साथ ही वह अपना उत्तरदायित्व स्वयं ले सके।

अपनी पुस्तक 'सेकेन्ड सेक्स' में पुरूषों की आलोचना करते हुए कहती है कि पुरूष ने समाज में महिलाओं की स्थिति खराब की है। पुरूषों ने महिलाओं के आस–पास एक रहस्य बनाने की कोशिश की है। पुरूषों ने किसी न किसी कारण हमेशा महिलाओं की समस्याओं को नजरअंदाज किया। सिमोन कहती है कि प्रत्येक सामाजिक समूह ने अपने से नीचे के सामाजिक समूह की उपेक्षा की है। यह केवल महिलाओं के साथ ही नहीं अपितु इस प्रकार का भेदभाव सामाजिक पहचान की अन्य श्रेणियों में जैसे नस्ल, वर्ग और धर्म में भी पाया जाता है। परन्तु महिलाओं के सन्दर्भ में यह भेदभाव और भी ज्यादा है। इसी भेदभाव के कारण पितृसत्तात्मक समाज का निर्माण होता है।

'सिमोन द बउआ' महिलाओं के लिए 'समान शिक्षा' और आर्थिक आजादी पर बल देती है। उनका मानना था कि आर्थिक आजादी ही महिलाओं को समाज में स्थान दिलाएगी। सिमोन द बउआ ने आरंभ में अपने आपको नारीवादी कहने से इंकार कर दिया था। 1960 और 1970 के दशक में जब नारीवादी आंदोलन ने जोर पकड़ा तो उन्होंने कहा कि समाजवादी क्रांति मात्र से महिलाओं का उद्धार नहीं होगा। उन्होंने 1972 में अपने आपको नारीवादी कहा।

'सिमोन द बउआ' ने हमेशा परिस्थितियों से लड़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि यदि हम परिस्थितियों से लड़ते नही ंतो हमारा अस्तित्व खरपतवार की तरह है। बउआ हर राजनीतिक प्रश्न पर पक्ष लेने की बात कहती है। वह कहती है कि स्वतंत्र होने का तात्पर्य अपने अंदर की सम्भावनाओं को विस्तार देना है। यह विस्तार उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है। संभावनाओं के विस्तार का तात्पर्य कदापि नहीं है कि हम कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हैं। वह कहती है कि हम धरती पर साथ रहते हैं और हमारा कर्त्तव्य एक

दूसरे का ध्यान रखना है। यदि हम स्वयं की स्वतंत्रता को प्यार करते हैं तो हमें दूसरे की स्वतंत्रता का भी ध्यान रखना होगा।

'सिमोन द बउआ' ने 'सर्वाधिकार वादी' शासन व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहा कि व्यक्ति तानाशाहों का विरोध करते हुए भारी कीमत चुकाता है। वह तानाशाहों के खिलाफ 'सामूहिक प्रयास' की वकालत करती है। बउआ ने अपनी लेखनी को शस्त्र के रूप में इस्तेमाल कर उन कानूनों के विरूद्ध आवाज उठायी जो महिलाओं को उनके शरीर के पूर्ण स्वामित्व से रोकता था। महिलाओं की बेहतरी के लिए सिमोन ने कहा कि महिलाओं को केवल पुरूषों के साथ उनके संबंधों के संदर्भ में नहीं देखना चाहिए। महिलाओं की अपनी स्वतंत्र पहचान होना चाहिए। पुरूष और स्त्री दोनों एक दूसरे के पूरक होने चाहिए पर अपनी स्वतंत्र पहचान के साथ। समाज जब महिलाओं के ऊपर आधिपत्य त्यागेगा तभी पुरूष और स्त्री दोनों अपने सम्बन्धों का सही स्वरूप प्राप्त कर सकेगा। सिमोन कहती है कि जिस दिन महिलाओं को उनकी निर्बलता के लिए नहीं अपितु उनकी शक्ति के लिए प्यार किया जायेगा, जिस दिन वो अपनी पहचान बनायेंगे, उस दिन वह स्वयं अपने लिए एवं पुरूषों के लिए जीवन का स्रोत बन जायेगी।

सिमोन जीवन को मूल्यवान बनाने का सूत्र बताते हुये कहती हैं कि जीवन तभी मूल्यवान बनता है जब हम अपने कर्मों से दूसरे के जीवन को मूल्यवान बनाते हैं। वह प्रेम, मित्रता, दया आदि प्रकार हो सकते हैं जिसके माध्यम से हम दूसरे के जीवन को मूल्यवान बनाते हैं।

जिस प्रकार मार्क्स ने सर्वहारा को उनकी निद्रा से जगाया था। उसी प्रकार सिमोन ने महिलाओं को जाग्रत करने का प्रयत्न किया। वह कहती हैं कि पुरूष की मानव के रूप में और महिलाओं की स्त्री के रूप में व्याख्या की जाती है जैसे ही महिला मानव की तरह व्यवहार करने लगती है वैसे ही उसे पुरूष की नकल करने वाला कहा जाता है।

इस प्रकार 'सिमोन बउआ' ने अपनी तीन पुस्तकों 'The Ethics of Ambiauity' 'The Second Sex' और 'The Mandarins' के माध्यम से दुनिया की अस्तित्ववादी नैतिकता से परिचित कराया। महिलाओं की समस्याओं और समाज की उन समस्याओं के प्रति

उदासीनता, महिलाओं को अपनी स्थिति को पहचानना और आगे बढ़कर अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित करना आदि ने उन्हें अस्तित्ववादी एवं 'नारीवाद' का नारा बुलंद करने वाली दार्शनिक के रूप में पहचान दी।

संदर्भ :–

1– 'द गार्डियन', न्यूज बेवसाइट।

2– ब्रिटेनिका एनसाइक्लोपीडिया।

3– एओन न्यूजलेटर

4– गुडरोड्स, www.goodreads.com

5– Internet Encyclopedia of Philosophy.